HINDI

Shiv jeet

97295-04909

Scanned by CamScanner

वाच्य

Shiv jeet

→ वाच्य का अर्थ है → कहने का ढंग
→ वाच्य के प्रकार → 3 (i) कर्तृवाच्य
(ii) कर्मवाच्य
(iii) भाव वाच्य

उदाहरण → (i) माली ने पौधों को पानी दिया। → कर्तृवाच्य
→ माली से/के द्वारा पौधों को पानी दिया जाता है → कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
→ क्रिया कर्ता के अनुसार	→ क्रिया कर्म के अनुसार	→ क्रिया भाव के अनुसार
→ कर्ता के साथ "से या के द्वारा" का प्रयोग नहीं होगा।	→ कर्ता के साथ "से या के द्वारा" का प्रयोग होगा।	→ कर्ता के साथ केवल "से" का प्रयोग होगा।
→ क्रिया "सकर्मक" व "अकर्मक" दोनों होगी	→ क्रिया केवल सकर्मक होगी	→ क्रिया केवल "अकर्मक" होगी।
→ "जाना" क्रिया का प्रयोग सहायक क्रिया के रूप में नहीं होगा।	→ "जाना" क्रिया का सहायक क्रिया के रूप मे प्रयोग होगा	→ "जाना" क्रिया का सहायक क्रिया के रूप मे प्रयोग होगा।
→ काल सदैव एक जैसा रहेगा	→ काल सदैव एक जैसा रहेगा	→ काल सदैव एक जैसा रहेगा।
→ कर्ता के साथ "ने" का प्रयोग भूतकाल में होगा		→ "सकना क्रिया "जाना" क्रिया मे बदल जाएगी।

उदाहरण → (i) लकड़हारा कुल्हाड़ी से लकड़ी काटता है → कर्तृवाच्य
→ लकड़हारा के द्वारा कुल्हाड़ी से लकड़ी कारी जाती है → कर्मवाच्य
(ii) राम पौधों को पानी देगा → कर्तृवाच्य
राम से/के द्वारा पौधों को पानी दिया जाएगा → कर्मवाच्य
(iii) गाय नहीं चलती। → कर्तृवाच्य
गाय से चला नहीं जाता। → भाववाच्य
(iv) गर्मियों में ठण्डे पानी से नहाया जाता है → कर्मवाच्य
गर्मियों में ठण्डे पानी से नहाते है → कर्तृवाच्य

Scanned by CamScanner

— क्रिया —

क्रिया → वाक्यों में जिन शब्दों से काम के होने का बोध हो क्रिया कहलाती है।
जैसे → राधा बहुत सुन्दर नाचती है।
मदारी बंदर को नचाता है।

Shiv jeet
9729504909

नोट → नाच - मूल रूप है
"ना" प्रत्यय लगाने से क्रिया बनती है — नाचना

धातु	सामान्य रूप	प्रथम प्रेरणा क्रिया	द्वितीय प्रेरणा क्रिया
चल	चलना	चलाना	चलवाना
नाच	नाचना	नचाना	नचवाना
हँस	हँसना	हँसाना	हँसवाना

∴ क्रिया के भेद ∴

1. सकर्मक क्रिया → वह क्रिया जिसमें कर्म हो।
→ वाक्य में यदि क्रिया के साथ "क्या" लगाकर प्रश्न करने पर यदि प्रश्न का उत्तर मिले तो सकर्मक क्रिया होगी। जैसे →
(i) राम पुस्तक पढ़ता है।
Trick → राम क्या पढ़ता है?
उत्तर → पुस्तक पढ़ता है → तो यह सकर्मक क्रिया है।

2. अकर्मक क्रिया → जिस क्रिया में "कर्म" नहीं होता वह अकर्मक क्रिया होती है।
→ यदि क्या लगाकर प्रश्न करने पर उत्तर नहीं मिलता तो क्रिया अकर्मक होगी। जैसे
(i) राम सोता है।
→ राम क्या सोता है?
उत्तर → नहीं मिला तो यह अकर्मक क्रिया है।

अन्य भेद →

1. प्रेरणार्थक क्रिया → जहाँ कर्ता किसी दूसरे से काम करवाता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है।
जैसे → माँ बेटी से चाय बनवाती है।

2. पूर्णकालिक क्रिया → क्रिया के साथ "कर" लगाने से बनने वाली क्रिया पूर्णकालिक क्रिया होती है जैसे —
(i) राधा नहाकर विद्यालय जाती है।

(ii) तात्कालिक क्रिया → जिस क्रिया में मुख्य क्रिया के बाद "ते ही" लगाकर दूसरी क्रिया जोड़ी गई हो वहाँ तात्कालिक क्रिया होगी।
जैसे → बालक दूध पीते ही सो गया।
→ पुलिस को देखते ही चोर भाग गया।

Scanned by CamScanner

— अलंकार —

अलंकार → काव्य में जहाँ शब्दों और अर्थ के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न किया जाए वहाँ अलंकार होता है।

अलंकार के दो भेद हैं → 1 शब्दालंकार
2 अर्थालंकार

Shiv jeet

1 **अनुप्रास** → काव्य में जहाँ व्यंजनों की बार-2 आवृत्ति से चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। इसे अलंकारों का राजा कहते हैं।

उदाहरण → रघुपति राघव राजा राम। → यहाँ "र" की बार-2 आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

2 **यमक अलंकार** → काव्य मे जहाँ एक शब्द एक से अधिक बार आए और हर बार उसका अर्थ अलग हो, वहाँ यमक अलंकार ~~होगा~~ होगा।

उदाहरण → काली घटा का घमंड घटा। → "कम होना"
↳ "बादल"

3. **श्लेष अलंकार** → काव्य में जहाँ एक शब्द केवल एक बार आए परंतु उसके एक से अधिक अर्थ निकले, वहाँ ~~श्लेष~~ श्लेष अलंकार होगा।

उदाहरण → सुबरन को ढूँढ़त फिर कवि, व्यभिचार, चोर।
↳ कवि के साथ → ~~अ~~ सुन्दर अक्षर
↳ व्यभिचारी के साथ → सुन्दर रंग
↳ चोर के साथ → स्वर्ण

4 **पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार** → काव्य में जहाँ एक शब्द एक साथ एक से अधिक बार प्रयोग किया जाए वहाँ ~~पु~~ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होगा।

उदाहरण → उठ-उठ रही लघु हिलोरें।
गिर-गिर, फिर-फिर आती॥

5 **उपमा अलंकार** → काव्य मे जहाँ उपमेय की उपमान से तुलना की जाए वहाँ उपमा अलंकार होगा।

पहचान → काव्य मे "सा, सी, से, सम, समान व सरिस" शब्द दिए होंगे। जैसे

(i) हरिपद कोमल कमल-से।

Scanned by CamScanner

(ii) पीपर पात सरिस मन डोला।

6 रूपक → काव्य में जहाँ उपमेय का उपमान पर आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होगा।

पहचान → काव्य में योजक चिह्न (–) लगा होगा।

उदाहरण → मैया मैं चन्द्र-खिलौना लेहौं।

7 उत्प्रेक्षा अलंकार → काव्य में जहाँ उपमेय का उपमान से घनिष्ठ संबंध प्रकट किया जाए तथा संभावना प्रकट की जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होगा।

उदाहरण → सिर फट गया उसका वहीं, मानो अरुण रंग का घड़ा हो।

पहचान → काव्य में "मानो, मनु, जानो, जनु, जनहु व मनहु" शब्द दिए होगें।

नोट :- उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग वैवाहिक अवसर पर किया जाता है।

8 मानवीकरण अलंकार → काव्य में जहाँ प्रकृति विषय, वस्तु में ~~जहाँ~~ मानवीय संबंध स्थापित किए जाए वहाँ मानवीकरण अलंकार होगा।

उदाहरण → मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(ii) धूल भागी घाघरा उड़ाए।

9 अतिश्योक्ति अलंकार → काव्य में जहाँ किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाए वहाँ अतिश्योक्ति अलंकार होगा।

उदाहरण → तेरी यह दंतुरित मुस्कान, मृदक में भी डाल देगी जान॥

10 विभावना अलंकार → काव्य में जहाँ कारण के बिना काम के होने की संभावना प्रकट की जाए, वहाँ विभावना अलंकार होगा।

पहचान → काव्य में "बिन, बिना, बिनु, बिनहु" शब्दों का प्रयोग होगा।

उदाहरण → निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटि छवाए।
बिन पानी बिन निर्मल करे सुभाव॥

Shiv jeet

Scanned by CamScanner

वाक्य

वाक्य → शब्दों के क्रमबद्ध एवं सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।
जैसे → राम वन में जाता है।

अंग → वाक्य के दो अंग होते है-

1 उद्देश्य → वाक्य में जिसके बारे में कहा जाए। अर्थात् कर्ता ही उद्देश्य होता है।
जैसे → राम वन मे गया।
↳ उद्देश्य

2 विधेय → उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए उसे विधेय कहते है।
जैसे → राम वन मे गया।
↳ विधेय

वाक्य के भेद → 3

1 सरल वाक्य → वह वाक्य जिसमें कम-से-कम एक उद्देश्य व एक विधेय हो।
जैसे → शिव पढ़ता है।
↳ उद्देश्य ↳ विधेय

2 संयुक्त वाक्य → जिसमें दो वाक्य मिलकर एक वाक्य होने का बोध करवाए।
जैसे → राम पढ़ता है और श्याम लिखता है।
राधा नाचती है परंतु गीता गाती है।

नोट:- इसमें समुच्चय बोधक, जैसे - और, किंतु, परंतु, अथवा, अन्यथा, तथा, व, एवं का प्रयोग होता है।

3 मिश्र वाक्य → जब दो वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाया जाए तथा दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हो। वह मिश्र वाक्य होता है।
जैसे → मुझे तेज बुखार है इसलिए मैं स्कूल मे नहीं आ सकता।

Shiv jeet
97295 04909

Scanned by CamScanner

ः काल ः

काल → वाक्य के जिस रूप से काम के होने या करने के समय का पता चले, उसे काल कहते है।

भेद → काल के 3 भेद है →

1. **भूतकाल** → काम के जिस रूप से किसी काम के बीते हुए समय का मे होने का पता चले, वहाँ भूतकाल होता।

भूतकाल के भेद → 6

(क) **सामान्य भूतकाल** → वह वाक्य जो काम के बीते हुए कल मे होने का सामान्य-सा बोध हो।

पहचान → वाक्य के अंत मे आ, ई, ए मिलेगा।

जैसे → (i) माली ने पौधों को पानी दिया।
(ii) गाड़ी आ गई।

(ख) **अपूर्ण भूतकाल** → जिसमें काम का बीते समय मे पूरा न होने का बोध हो।

जैसे → गाड़ी जा रही थी।
राधा नाच रही थी।

पहचान → जहाँ रहा था, रही थी, रहे थे, हो वहाँ अपूर्णभूतकाल होता है।

(ग) **पूर्ण भूतकाल** → काम बीते हुए समय मे पूरा होने का बोध करवाए।

पहचान → चुका था, चुकी थी, चुके थे।

जैसे → गाड़ी जा चुकी थी।

(घ) **आसन भूतकाल** → काम के बीते हुए समय मे अभी-2 होने का बोध करवाए।

पहचान → गई है, गया है, आ है, ए है

Shiv jeet

जैसे → (i) परीक्षा समाप्त हो गई है।
(ii) गाड़ी आ गई है।

(ङ) **संभाव्य भूतकाल** → काम के बीते हुए समय मे होने की संभावना प्रकट की जाए।

पहचान → गई होगी, गया होगा, गए होगें

जैसे → गाड़ी आ गई होगी।

(च) **हेतुहेतुमद भूतकाल** → काम के जिस रूप से बीते हुए समय मे होने परंतु किसी कारणवश पूरा न होने का बोध करवाए।

Scanned by CamScanner

पहचान→ होते, होती, होता
जैसे→ यदि हम पढ़ते तो नौकरी लग गए होते।

2 **वर्तमान काल**→ काम के हाल ही में होने का बोध करवाया जाए।

भेद→ वर्तमानकाल के तीन भेद है।

(क) **सामान्य वर्तमान**→ काम के हाल ही में होने का सामान्य-सा बोध करवाया जाए।

पहचान→ वाक्य मे ता है, ती है, ते है मिलता है।
जैसे→ मोहन पढ़ता है।
राधा नाचती है।

(ख) **अपूर्ण वर्तमान**→ काम के हाल ही मे होने का पूर्ण बोध न कराए।

पहचान→ रहा है, रही है, रहे हैं
जैसे→ बच्चे खेल रहे हैं।
राधा नाच रही हैं।

(ग) **संभाव्य वर्तमान**→ काम के हाल ही मे होने की संभावना प्रकट की जाए।

पहचान→ रहा होगा, रही होगी, रहे होगे।
जैसे→ (i) पवन पढ़ रहा होगी।
(ii) गाड़ी आ रही होगी।

3. **भविष्यकाल**→ काम के आने वाले समय मे होने का बोध हो।
जैसे→ हम मेला देखने जाएंगें।

Shiv jeet

भेद→ काव्य के तीन भेद है→

(क) **सामान्य भविष्यकाल**→ काम के आने वाले समय में होने का सामान्य-सा बोध हो।

पहचान → गा, गे, गी
जैसे→ आगामी महिने मे बारिश होगी।

(ख) **संभाव्य भविष्यकाल**→ काम के आने वाले समय मे होने की संभावना प्रकट की जाए।

जैसे→ शायद अच्छे दिन आएँगें।

(ग) **हेतुहेतुमद भविष्यकाल**→ काम आने वाले समय मे होगा, परतुं किसी दूसरी क्रिया पर निर्भर होगा।

जैसे→ यदि हम मेहनत करेगें तो नौकरी लग जाएंगें।

Scanned by CamScanner

÷ सर्वनाम ÷

सर्वनाम → संज्ञा के ~~स्थान~~ स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं जैसे → यह, वह, वे इत्यादि।

भेद → सर्वनाम के छः भेद है।

Trick → आज पुरुष निजी संबंधों की निश्चितता व अनिश्चितता के के प्रश्नों में उलझा है।

1 पुरुषवाचक सर्वनाम → वे सर्वनाम शब्द जो श्रोता, वक्ता तथा किसी तीसरे का बोध करवाए पुरुषवाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे → मैं, तुम, तुझे, तुमको, उनका, उन्हें इत्यादी।

भेद → 3

(क) उत्तम पुरुष → वक्ता के लिए प्रयोग होने वाले शब्द उत्तम पुरुष होते हैं।
जैसे → मैं, मेरा, मुझे, हम, हमारा इत्यादि

(ख) मध्यम पुरुष → श्रोता के लिए प्रयोग होने वाले शब्द जैसे तुम, तुम्हारा, तुझे, तुमको इत्यादि।

(ग) अन्य पुरुष → तीसरे व्यक्ति के लिए जैसे → उनका, उनकी, उनके, इनका, इनसे, उन्हें, उन्होंने, उन्होंने इत्यादि

उदाहरण → (i) हम दिल्ली जाएंगे।
↳ उत्तम पुरुष
(ii) तुम भी दिल्ली जाओगे।

2 अनिश्चयवाचक सर्वनाम → वे सर्वनाम जो संज्ञा के निश्चित न होने का बोध करवाएं।

पहचान → कुछ, कोई, किसी, कहीं

उदाहरण → बाजार से कुछ खरीद लाना।

3 निश्चयवाचक सर्वनाम → वे सर्वनाम जो संज्ञा के निश्चित होने का बोध करवाए।

पहचान → ये, यह, वे, वह

उदाहरण → (i) ये खेत हमारे है।
(ii) वह राम का दोस्त है।

4 निजवाचक सर्वनाम → वे सर्वनाम जो अपनेपन का बोध करवाए

पहचान → स्वयं, स्वतः, अपने आप, खुद, अपना - अपना

Scanned by CamScanner

उदाहरण → 1 राधा स्वयं ही पढ़ने लग गई।
2 मैं अपने आप ही चला जाऊँगा।

5 प्रश्नवाचक सर्वनाम → वे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा के बारे में पूछने का बोध कराए।

पहचान → कहाँ, कौन, कब, किसको, किसे, किसका, कैसे इत्यादि

उदाहरण → राम कहाँ जाएगा?

6 संबंधवाचक सर्वनाम → वे सर्वनाम शब्द जो संज्ञाओं के बीच संबंध प्रकट करे।

पहचान → जिसका, जिसकी, उसका - उसकी, जो सो इत्यादि।

उदाहरण → जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो बोएगा सो पाएगा।

Shiv jeet
9729504909

Scanned by CamScanner

→ संज्ञा ←

संज्ञा → वे शब्द जो व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण-दोष, स्वभाव इत्यादि का बोध करवाए।

जैसे → राम, पुस्तक, गिलास, गंगा, गाय, हिमालय आदि।

भेद → संज्ञा के तीन भेद है–

1 **व्यक्तिवाचक संज्ञा** → वे संज्ञा शब्द जो व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम का बोध करवाए।

जैसे → दीपक, गीता, रामायण, दिल्ली आदि।

2 **जातिवाचक संज्ञा** → वे संज्ञा शब्द जो व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के संपूर्ण समूह या जाति का बोध करवाए।

जैसे → लड़का, पुस्तक, देश, नगर, नदी आदि।

Note:- जातिवाचक संज्ञा व व्यक्तिवाचक संज्ञा की पहचान "कौन-सा" शब्द लगाकर कर सकते है। यदि उत्तर आया तो व्यक्तिवाचक संज्ञा, उत्तर नहीं आया तो जातिवाचक संज्ञा होगी।

→ इसके दो भेद है–

(1) **द्रव्यवाचक संज्ञा** → वह जातिवाचक संज्ञा शब्द जो संपूर्ण जाति का बोध करवाए।

जैसे → नमक, लोहा, पानी, लड़का।

(2) **समूहवाचक संज्ञा** → वे जाति वाचक शब्द जो पूरे समूह का बोध करवाए।

जैसे → कक्षा, काफिला, गुच्छा, टीम आदि।

3 **भाववाचक संज्ञा** → वे संज्ञा शब्द जिन्हें व्यक्ति अनुभव करता है जैसे-

जैसे → गर्व, बचपन, सुख, दुख, प्यार आदि।

Note → भाववाचक संज्ञा → 5 प्रकार के शब्दों से मिलकर बनती है।

(क) जातिवाचक → मित्रता, बुढ़ापा

(ख) सर्वनाम → अपनापन, आपा, अहंकार

(ग) विशेषण → कालापन, कमीनापन, शक्तिमा

(घ) क्रिया → पढ़ना, लिखना, छिड़कना

(ङ) अव्यय → धिक्-धिकार, निकटता

Shiv jeet
9729504909

Scanned by CamScanner

→ व्यक्तिवाचक संज्ञा → व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा बन जाएगी जब →

(i) किसी प्रसिद्ध व्यक्ति को बहुवचन बनाकर प्रयोग किया जाए।
जैसे → आज देश को भगत सिंहों की जरूरत है।

→ जातिवाचक संज्ञा व्यक्तिवाचक बन जाएगी जब
(i) किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के पद के आधार पर -
जैसे → पंडित जी देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

Shiv jeet
9729504909

Scanned by CamScanner

→ कारक ←

कारक → वाक्य में क्रिया के साथ संबंध बताने वाले पदों को कारक कहते है।

→ भेद → 8
↳ मुख्य - 6
↳ उपभेद - 2

Shiv jeet

कारक	परसर्ग चिह्न
कर्ता	"ने"
कर्म	"को"
करण	"से" या "के द्वारा"
संप्रदान	"के लिए"
अपादान	"से"
अधिकरण	"में या पर"
उपभेद ↳ संबंध	"का, के, की"
↳ संबोधन	"हे!, अरे, अरि"

1 कर्ता → काम को करने वाला कर्ता कहलाता है।
जैसे → मोहन खेलता है।
↳ कर्ता

2 कर्म → वाक्य मे जिस क्रिया पर प्रभाव या फल पड़े।
जैसे → बालक ने सांप को मारा।
सुनील फल खाता है।

3 करण कारक → कर्ता जिस साधन से क्रिया पूरी करे।
जैसे → माता आँखों से देखती है।

4 संप्रदान कारक → कर्ता जिसके लिए काम करता है।
नोट → वाक्य मे जहाँ देना, वास्ते, प्रेम, अच्छा लगना इत्यादि क्रिया होगी वहाँ संप्रदान कारक होगा।
जैसे → माँ पुत्र से प्रेम करती है।

5 अपादान कारक → जहाँ अलग होने का भाव होगा वहाँ अपादान कारक होगा।
जैसे → वृक्ष से पत्ते गिरते है।

नोट → वाक्य मे जहाँ निकलना, लज्जा, सीखना, तुलना, ईर्ष्या, डर आदि क्रिया हो वहाँ अपादान कारक होगा।

Scanned by CamScanner

जैसे→ ललित गुरु से कथक सीखता है।
सुरेश रमेश से मेधावी है।

6 अधिकरण कारक→ कर्ता जिसको आधार मानकर क्रिया करता है।

जैसे→ बच्चे कक्षा मे बैठते है।
पक्षी आसमान मे उड़ते है।

नोट→ जहाँ श्रेष्ठ, निपुण, विश्वास आदि क्रियाएं हो वहां अधिकरण कारक होगा।

जैसे→ कवियों मे कालिदास श्रेष्ठ है। Shiv jeet
राम वाद-विवाद मे निपुण है।

7 संबंध कारक→ जिस कारक का संबंध क्रिया से नहीं होता बल्कि संज्ञा से होता है।

जैसे→ दशरथ का पुत्र राम वन गया।

8 संबोधन कारक→ कर्ता को बुलाने या पुकारने का भाव हो वहाँ संबोधन कारक होगा।

जैसे→ हे प्रभु! उसके ऊपर कृपा करना।
विभु! इधर आओ।

Scanned by CamScanner

॰ रस ॰

→ रस का अर्थ → आस्वादन लेना (अनुभूति) — Shiv jeet
→ रस का जनक → भरतमुनि (नाट्यशास्त्र / रसशास्त्र)
→ संस्कृत में आठ रस है।
→ हिन्दी में मुख्य रूप से 9 रस है और कुल 11 रस है।
→ हिन्दी भाषा का स्वर्णकाल → भक्तिकाल (भक्तिरस)
→ वात्सल्य रस के जनक → सुरदास
→ रस को काव्य की आत्मा कहा जाता है।
→ ~~शृंगार~~ शृंगार रस को श्रेष्ठ रस माना जाता है इसलिए इसे रसराज (रसों का राजा) कहा जाता है।

रस के अंग → (i) स्थायीभाव → जो मन में आरंभ से अंत तक चले
(ii) विभाव →
(iii) अनुभाव →
(iv) संचायी भाव →

रस	स्थायी भाव	सामान्य क्रिया
1. शृंगार रस	→ रति का भाव	→ प्रेम ↳ संयोग / वियोग
2. हास्य रस	→ हास का भाव	→ हसँना।
3. करुण रस	→ शोक	→ दुख
4. वीर रस	→ उत्साह	→ जोश
5. रौद्र रस	→ क्रोध	→ गुस्सा
6. अद्भुत रस	→ विस्मय	→ हैरानी
7. वीभत्स रस	→ जुगुप्सा	→ घृणा
8. भयानक रस	→ भय	→ डर
9. शांत रस	→ निर्वेद / सम	→ उदासीनता
10. भक्ति रस	→ भक्ति	→ प्रेम (भगत व भगवान)
11. वात्सल्य रस	→ वत्सल	→ प्रेम (माता-पिता का संतान के प्रति)

1. शृंगार रस → काव्य में जहाँ प्रेम या सौंदर्यता की बात की जाए वहाँ "रति" स्थायी भाव रहेगा।

उदहारण → कहत, नटत, रिझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियत।
भरते भवन में करत है, नयन ही सो बात ॥
↳ संयोग रस

→ हे मृग, खग, भमर! तुमने देखी सीता मेरी।
↳ वियोग रस

Scanned by CamScanner

2 हास्य रस → काव्य मे जहाँ एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष का उपहास (मजाक) बनाया जाए वहाँ "हास" का भाव होगा।

उदाहरण → सिर पर गंगे हँसे।
भुजग भुजंगा हँसे ॥
हसी का दंगा भयो।
नंगो के विवाह मे ॥

Shiv jeet
97295 04909

नोट → विवाह मे अक्सर "हास्य रस" होता है।

3 करुण रस → काव्य मे जहाँ अरुचिकर घटना या प्रसंग का वर्णन किया जाए वहाँ "शोक के भाव आएगे।

उदाहरण → हे मेरे हृदय के हर्ष हाय! अभिमन्यु अब तु है कहाँ।
दृग खोल बेटा तनिक हम सब खड़े है यहाँ॥

4 वीर रस → काव्य मे जहाँ प्रतिकूल परिस्थितियों मे जो वीरतापूर्वक काम किया जाए वहाँ मन मे उत्साह के भाव आएंगे।

उदाहरण → चमक उठी सन् सतावन मे, वो तलवार पुरानी थी।
बुँदेलो-हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी॥
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

→ "झाँसी की ~~रानी~~ रानी" → सुभद्रा कुमारी चौहान

5 रौद्र रस → काव्य मे जहाँ एक पक्ष दूसरे पक्ष का अपमान किया जाएगा वहाँ मन मे क्रोध के भाव आएंगे।

उदाहरण → काल कवलु होई हि छन नाहि।
कहु पुकारि खोरि मही नाहिं॥
जो हटकहु जे चाहहु उबारा।
कहे प्रतापु बलु रोषु हमारा॥

6 अद्भुत रस → काव्य मे जहाँ अलौकिक घटना या प्रसंग का वर्णन किया जाए वहाँ मन मे विस्मय (हैरानी) के भाव आएंगे।

उदाहरण → एक अचंभा देख र भाई।
ठाढा सिंह चरावे गाई॥
आगे पुत पिछे माई।
चेला के गुरु लागे पाई॥

Scanned by CamScanner

7 वीभत्स रस → काव्य में जहाँ अरुचिकर या घृणास्पद वस्तु या प्रसंग का वर्णन किया जाए। वहाँ जुगुप्सा (घृणा) के भाव आएंगे।

उदाहरण → आँख निकल उड़ जाते क्षणभर उड़कर फिर आते।
शव जीभ खिंचकर कौवे, चुगल-चुगल कर खाते॥

8 भयानक रस → काव्य में जहाँ किसी भयानक, अनिष्टकारी वस्तु को देखने से जो भय के भाव उत्पन्न होगें। इसका स्थायी भाव "भय" होता है।

Shivjeet
9729504909

Scanned by CamScanner

समास

समास → दो या दो से अधिक पदों से मिलकर बना नया पद समास कहलाता है।
जैसे → घड़ी + घड़ी = हरघड़ी

समास के भेद → 6

Shiv jeet

समास	→ पद की प्रधानता
1 अव्यीभाव समास	→ पहला पद प्रधान होता है।
2 तत्पुरुष समास	→ दूसरा पद प्रधान होता है।
3 द्वंद्व समास	→ दोनों पद प्रधान होते हैं।
4 बहुब्रीही समास	→ तीसरा (अन्य) पद प्रधान होता है।
5 कर्मधारय समास	→ दूसरा पद प्रधान होता है।
6 द्विगु समास	→ पहला पद संख्यावाची है तथा दूसरा पद प्रधान होता है।

Note → 1 तत्पुरुष का भेद माना जाता है → कर्मधारय
2 कर्मधारय का भेद माना जाता है → द्विगु को

1 अव्ययीभाव समास

→ जिस समास मे पहला पद प्रधान होता है व समस्त पद प्रधान होता है।

→ उपसर्ग युक्त शब्द अव्ययीभाव समास के उदाहरण होगें।

उदाहरण → प्रति दिन
जीवन भर → आजीवन
मरण तक → आमरण
जन्म भर → आजन्म
शक्ति के अनुसार → यथाशक्ति
पूरा पेट भर के → भरपेट
पूरी तरह से → भरपूर

→ विग्रह करने पर दोनों पद एक जैसे दिखाई देगें।

उदाहरण → प्रतिमास → मास – मास
हरघड़ी → घड़ी – घड़ी
प्रत्येक → एक – एक
दिनों दिन → दिन – दिन
रातों रात → रात – रात

Scanned by CamScanner

2 तत्पुरुष समास → जिस समास मे दूसरा पद प्रधान होता है

जैसे → गंगा का जल → गंगा जल → दूसरा पद

हाथों के लिए कड़ी → हथकड़ी → दूसरा पद

(क) कर्म तत्पुरुष → इसमें "को" शब्द का लोप हो जाता है।

जैसे → ग्राम को गत → ग्रामगत

चिड़िया को मारने वाला → चिड़िमार

(ख) करण तत्पुरुष समास → इसमें "से" व "के द्वारा" का लोप हो जाता है।

जैसे → रोग से ग्रस्त → रोगग्रस्त

मुँह से माँगा → मुँहमाँगा

तुलसी द्वारा कृत → तुलसीकृत

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष → इसमें "के लिए" का लोप हो जाता है।

जैसे → देश के लिए भक्ति → देशभक्ति

माल के लिए गोदाम → मालगोदाम

रसोई के लिए घर → रसोईघर

Shivjeet

(घ) अपादान तत्पुरुष समास → इसमें "से" का लोप हो जाता है। तथा अलगाव का भाव आता है।

जैसे → देश से निकाला → देशनिकाला

आकाश से पतित → आकाशपतित

ऋण से मुक्त → ऋणमुक्त

(ङ) संबंध तत्पुरुष → इसमें "का, के, की" का लोप हो जाता है

जैसे → राम की कहानी → रामकहानी

शास्त्र के अनुकूल → शास्त्रानुकूल

जीवन का साथी → जीवनसाथी

(च) अधिकरण तत्पुरुष समास → इसमें "में" या "पर" का लोप हो जाता है

जैसे → आत्म पर निर्भर → आत्मनिर्भर

आत्म पर विश्वास → आत्मविश्वास

(छ) नञ तत्पुरुष समास → जिस समास मे नकारात्मक भाव उत्पन्न हो।

स्वर के लिए "अन"	व्यंजन के लिए "अ"	अरबी-फारसी "ना"
न उचित → अनुचित	न धर्म → अधर्म	न पाक = नापाक
न इच्छा → अनिच्छा	न टूट → अटूट	न मंजूर → नामंजूर
न अंत → अनंत	न सत्य → असत्य	न लायक → नालायक

Scanned by CamScanner

3. द्वंद्व समास → जिस समास में दोनों पद प्रधान हो।
→ विलोम शब्द द्वंद्व समास के उदाहरण होंगें।
→ दोनों के बीच योजक चिह्न होगा।
जैसे → माता-पिता → माता और पिता
लाभालाभ → लाभ और अलाभ
अहर्निश → अहन और निश

4 बहुव्रीहि समास → जिस समास मे तीसरा या अन्य पद प्रधान हो।
पहचान → सारे देवी-देवताओं के नाम या उपनाम इस समास के उदाहरण है।
→ विग्रह करने पर (है जिसका, है जिसके, है जिसकी, वाला) हो तो बहुव्रीहि समास होगा।
उदाहरण → चन्द्रशेखर → चन्द्र है जिसके शिखर पर
त्रिनेत्र → तीन नेत्र है जिसके
मोदकप्रिय → मोदक प्रिय है जिसको
गिरधर → ~~किसी~~ गिर को धारण करने वाला
उरग → छाती के बल पर चलने वाला (सर्प)

Shiv Jeet
9729504909

5. कर्मधारय समास → जिस समास मे विशेष्य-विशेषण, उपमान-उपमेय, या 'रूपक' का संबंध बताया जाए।
जैसे → नीलगगन → नीला है जो गगन
दीर्घायु → दीर्घ है जो आयु
अंधकूप → अंधा है जो कूप
वचनामृत → वचनरूपी अमृत
विद्याधन → विद्या रूपी धन

6 द्विगु समास → जिसका पहला पद संख्यावाची हो तथा दूसरा पद प्रधान हो।
जैसे → द्विगु → दो गायों का समूह
द्विरत्न → दो रत्नों का समूह
चारपाई → चार पाँव है जिसके
दोपहर → दो पहरों का समूह
नवरात्री → नौ रातों का समूह

Scanned by CamScanner

→ विशेषण ←

विशेषण → वे संज्ञा शब्द जो संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताए।
→ विशेषता को ही विशेषण कहते हैं।

उदाहरण → पुरानी पुस्तक
↳ विशेषण

Shivjeet

प्रविशेषण → जो विशेषण की विशेषता बताए।
उदाहरण → बहुत बुढ़ा आदमी।
↳ विशेषण
↳ प्रविशेषण

क्रिया विशेषण → वे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताए।
उदाहरण → हाथी मंद चलता है।
क्रिया विशेषण ↳ ↳ क्रिया

विशेष्य → जिसकी विशेषता बताई जाए।
उदाहरण → बुढ़ा आदमी।
↳ विशेष्य
↳ विशेषण

विशेषण के भेद → 4

1 **गुणवाचक विशेषण** → वे विशेषण शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के गुण-दोष, आकार, अवस्था आदि का बोध करवाए।

जैसे → बहादुर लोग युद्ध में करणी करते है।
↳ गुणवाचक विशेषण
कायर व्यक्ति युद्ध से भागते हैं।
↳ गुणवाचक विशेषण
कमरा जर्जर है।
↳ गुणवाचक विशेषण

2 **संख्यावाचक विशेषण** → वे विशेषण शब्द जो संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताए।

पहचान → दो, पाँच, सौ, हजार, पाँच लाख, कुछ, थोड़ा, अधिक, कम
उदाहरण → दो व्यक्ति आ रहे हैं।
↳ संख्यावाचक विशेषण

Scanned by CamScanner

संख्यावाचक विशेषण

निश्चित संख्यावाचक
जैसे → चार व्यक्ति आ रहे हैं।

अनिश्चित संख्यावाचक
↳ कुछ व्यक्ति आ रहे हैं।

2 परिमाणवाचक विशेषण → वे विशेषण शब्द जो संज्ञा व सर्वनाम के मापतोल का बोध कराए।

पहचान → दो किलोग्राम, पांच लीटर, दो सौ मीटर, पाँच टन, दो क्विंटल आदि।

उदाहरण → उसने दो लीटर तेल खरीदा।
↳ परिमाणवाचक विशेषण

5 सर्वनामिक विशेषण → वे सर्वनाम जो संज्ञा के आगे आकर संज्ञा की विशेषता बताएँ।

उदाहरण → ये खेत हमारे है।
↳ संज्ञा
↳ सार्वनामिक विशेषण

Shiv Jeet

नोट → निश्चयवाचक सर्वनाम → इसमें सर्वनाम के बाद संज्ञा नहीं आती।
जैसे → ये हमारे खेत है।

Scanned by CamScanner

→ सन्धि ←

सन्धि → वर्णों के परिवर्तन सहित मेल को संधि कहते हैं।

जैसे → सुर + इन्द्र → सुरेन्द्र

भेद → सन्धि के तीन भेद है →

1. स्वर सन्धि → स्वर के बाद स्वर आने तथा उन दोनों के मिलने से जो परिवर्तन होगा, वही स्वर सन्धि कहलाएगा।

जैसे → मेघ + आलय = मेघालय

2. व्यंजन सन्धि → व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो सार्थक परिवर्तन होगा, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

जैसे → जगत् + ईश = जगदीश

सत् + जन = सज्जन

3. विसर्ग सन्धि → (:) विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो सार्थक परिवर्तन होगा, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

जैसे → निः दोष = निर्दोष   Shiv jeet

निः आशा = निराशा;   9729504909

[:- स्वर सन्धि के 5 भेद]

1. दीर्घ सन्धि → Trick "शब्द के बीच में "आ" "ई", "ऊ" मिले"

अ, आ + अ, आ = तो "आ" बनेगा

इ, ई + ई, ई = तो "ई" बनेगा

उ, ऊ + उ, ऊ = तो "ऊ" बनेगा

उदाहरण → राम + आनंद = रामानंद

अ + आ

कपि + ईश = कपीश

इ + ई

लघु + उत्तम = लघूत्तम

उ + उ

2. गुणसन्धि → Trick- शब्द के बीच में "ए", "ओ" "अर्" मिले वहीं गुण सन्धि होगी।

अ, आ + ई, इ = "ए" मे बदलेगा

अ, आ + उ, ऊ = "ओ" ———

अ, आ + ऋ = "अर् ———

Scanned by CamScanner

जैसे → (i) रमा + ईश = रमेश
आ + ई = ए

(ii) हित + उपदेश = हितोपदेश
अ + उ = ओ

(iii) राजा + ऋषि = राजर्षि
आ + ऋ = र्

(iv) वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु

3 वृद्धि सन्धि = Trick- शब्द के बीच मे "ऐ", "औ", "र्", "ै" हो तो वृद्धि सन्धि होगी।

अ, आ + ए, ऐ = "ऐ" बनेगा
अ, आ + ओ, औ = "औ" बनेगा

Shivjeet

जैसे → एक + एक = एकैक
अ + ए = ऐ
मह + औषधी = महौषधी

4 यण सन्धि → Trick → शब्द के बीच मे "य", "र", "ल", "व" मिले तो यण सन्धि होगी।
↳ important

इ, ई → के बाद भिन्न स्वर आए तो → "य" मे बदलेगा
उ, ऊ → " " " " " → "व" मे बदलेगा
ऋ → " " " " " → "र" मे बदलेगा

जैसे → (i) प्रति + आशा = प्रत्याशा
इ + आ = य

(ii) सु + आगत = स्वागत
उ + आ = व

(iii) पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
ऋ + आ = र

5 आद्यादि सन्धि → Trick → यदि शब्द के बीच मे "य" "व" से पहले पूरा व्यंजन हो तो वहां अयादि सन्धि होगी।

~~जैसे~~ → ए → के बाद भिन्न स्वर है तो → अय् हो जाता है।
ऐ → " " " " " → आय् हो जाता है।
ओ → " " " " " → अव् हो जाता है
औ → " " " " " = आव् हो जाता है।

जैसे → ने + अन = नयन
नै + अक = नायक
पो + अन = पवन
भौ + उक = भावुक

Scanned by CamScanner

Shiv jeet
9729504909

पहला वर्ग	दूसरा वर्ग	तीसरा वर्ग	चौथा वर्ग	पाचवां वर्ग
क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त्	थ्	द्	ध्	न्
प्	फ्	ब्	भ्	म्
य्	र्	ल्	व्	
श्	स्	ष्	ह्	

1 व्यंजन सन्धि → (i) यदि "क, च, ट, त, प" है तो ये अपने वर्ग के तीसरे मे बदलेगें। → उनके बाद कोई स्वर या, य, र, ल, व

क् - "ग्"
च् - "ज्"
ट् - "ड्"
त् = "द्"
प् = "ब्"

जैसे → दिक् + अम्बर = दिगम्बर
जगत् + ईश = जगदीश
षट् + यंत्र = षड्यंत्र

(ii) "क, च, ट, त, प, के बाद "म" या "न" आएगा तो वह अपने वर्ग के पाँचवे वर्ग मे बदल जाते हैं।

क् → "ङ्"
च् → "ञ्"
ट् → "ण्"
त् → "न्"
प् → "म्"

जैसे → दिक् + नाथ = दिङ्नाथ
उत् + मुक्त = उन्मुक्त

(iii) त् संबंधी नियम →

(क) "त" के बाद "च" या "छ" आने पर "त" के स्थान "च" हो जाएगा = त् + "च" या "छ" = च्

जैसे → उत् + चारण = उच्चारण

(ख) "त" के बाद "ज" आने पर "त" के स्थान पर "ज" बनेगा।

त् + ज् = ज्

जैसे → उत् + ज्वल = उज्ज्वल

Scanned by CamScanner

(iii) "त" के बाद "ट" आने पर "त" "ट" हो जाएगा।
जैसे→ तत् + टीका = तट्टीका

3 विसर्ग सन्धि → यदि (:) विसर्ग से पहले "अ" तथा विसर्ग के बाद "अ", तीसरा वर्ग, चौथा वर्ग, पाँचवा वर्ग या "य", र, ल, व हो तो अ: इनकी जगह "ओ" तथा बाद आने वाले "अ" का लोप हो जाएगा।

(ii) यदि विसर्ग से पहले "ई" "उ" हो तो और उसके बाद कोई भी स्वर या तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ग हो तो विसर्ग के स्थान पर "र" हो जाता है।

Shiv jeet

जैसे→ दु: + गुण = दुर्गुण

(iii) यदि विसर्ग से पहले स्वर तथा विसर्ग के बाद "च" "छ" हो तो वह "श" हो जाता है।
जैसे→ नि: + चित → निश्चित
दु: + चरित → दुश्चरित

(iv) यदि विसर्ग से पहले स्वर हो तथा बाद मे "त", "थ" हो तो वह "स" में बदल जाता है।
जैसे→ नम: + ते = नमस्ते

(v) यदि विसर्ग से पहले स्वर तथा बाद मे "क" "ख", "ट", "ठ" तथा "प" "फ" हो तो वह "ष" मे बदल जाता है।
जैसे→ नि: क्रिय → निष्क्रिय
नि: ठा → निष्ठा
मि: ठान → मिष्ठान
नि: फल → निष्फल

Scanned by CamScanner

→ वर्ण ←

वर्ण → भाषा की लघुतम ध्वनि वर्ण कहलाती है
↳ वर्णों की संख्या → 44
↳ हिन्दी में कुल वर्ण → 52

Shiv jeet
9729504909

भेद → वर्ण के दो भेद हैं — 1 स्वर 2 व्यंजन

1 स्वर → जो वर्ण निर्बाध्य होकर उच्चारित हो- इनकी संख्या 11 है।

स्वर के भेद → (क) बनावट के आधार पर

(i) **मूलस्वर** → वे स्वर जिनकी रचना अन्य स्वरों से नहीं हुई हो।
जैसे → अ, इ, उ, ऋ = 4

(ii) **दीर्घस्वर** → वे स्वर जो अपने ही वर्ण के स्वरों से बने हों। इन्हें सजातीय वर्ण कहते है।
जैसे → आ, ई, ऊ = 3

(iii) **संयुक्त स्वर** → जब दो स्वरों को मिलाकर नया स्वर बने तो वह स्वर संयुक्त स्वर होता है। इन्हें विजातीय स्वर भी कहते हैं।
जैसे → ए, ऐ, ओ, औ = 4

नोट → दीर्घ स्वर व संयुक्त स्वर को संधि स्वर भी कहते हैं।

(ख) उच्चारण के आधार पर →

(i) **ह्रस्व स्वर** → वे स्वर जिन्हें बोलने में कम-से-कम समय लगे। इन्हें एकमात्रिक स्वर भी कहते है।
जैसे → अ, इ, उ, ऋ = 4

(ii) **दीर्घ स्वर** → जिन्हें बोलते समय दो स्वरों का समय लगता है। इन्हें द्विमात्रिक स्वर भी कहते हैं।
जैसे → आ, ई, ऊ, ~~ए~~, ऐ, ~~ओ~~, औ

(iii) **संयुक्त स्वर** → संयुक्त स्वर दो भिन्न स्वरों के मेल से बनते है।
जैसे → इ + अ = ए अ + उ = ओ
अ + ए = ऐ अ + ओ = औ

~~अब~~ 2. **व्यंजन वर्ण** → जिन वर्णों के उच्चारण में भीतर से आने वाली वायु मुख के किसी उच्चारण अवयव से बाधित होकर निकलती हैं इन्हे व्यंजन कहते है।

→ व्यंजन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता अनिवार्य रूप से ली जाती है। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में "अ" की ध्वनि छिपी रहती है
जैसे = क = क् + अ , ख = ख् + अ

Scanned by CamScanner

→ हिन्दी के मूल व्यंजन वर्णों की संख्या = 33

भेद → व्यंजन के तीन भेद है

(i) स्पर्श व्यंजन → हिन्दी के वे व्यंजन स्पर्श व्यंजन कहलाते है जिनका उच्चारण कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श से होता है। इन्हें वर्गीय व्यंजन भी कहते हैं।

→ इनकी संख्या 25 है।

क वर्ग → क, ख, ग, घ, ङ. (कण्ठ से)
च वर्ग → च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)
ट वर्ग → ट, ठ, ड, ढ, ण (मूर्द्धा से)
त वर्ग → त, थ, द, ध, न (दन्त से)
प वर्ग → प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

Shiv jeet
9729504909

(ii) अन्तःस्थ व्यंजन → हिन्दी व्यंजन ध्वनियों में अंतस्थ ध्वनियाँ चार है
→ य, र, ल, व
↳ इन्हें अर्द्ध स्वर भी कहा जाता है।
↳ इनक

(iii) ऊष्म व्यंजन → रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ ऊष्म व्यंजन कहलाती है।
↳ इनकी संख्या 4 है → श, ष, स है।

(i) नासिक्य → इनके उच्चारण मे हवा जीभ के दोनो पार्श्वों से निकलती है
(ii) पार्श्विक → ल जिसके उच्चारण मे हवा जीभ के दोनों पार्श्वों से निकलती है।
(iii) उत्क्षिप्त व्यंजन → जीभ ऊपर उठकर झटके के साथ नीचे आती है जैसे → ड., ढ.।
(iv) प्रकंपित व्यंजन → जिनके उच्चारण में कंपन हो जैसे - "र"।
(v) संघर्ष हीन संप्रवाह → जिनके उच्चारण मे हवा बिना संघर्ष से निकलती है। इसलिए इन्हें अर्द्ध स्वर भी कहते हैं।

जैसे → य, व

→ प्राण के आधार पर →

(i) अल्पप्राण → जिन व्यंजनो के उच्चारण में कम वायु (प्राण) की आवश्यकता पड़ती है।
↳ प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा व अल्पप्राण होते हैं।
जैसे → क, ग, ङ.

Scanned by CamScanner

(ii) महाप्राण → जिनका उच्चारण करने मे अधिक वायु (प्राण) की आवश्यकता पड़ती है उन्हें महाप्राण कहा जाता है।
↳ जैसे → ख, घ
↳ हर वर्ग का दूसरा व चौथा महाप्राण व्यंजन होता है।

→ स्वरतन्त्रियों के आधार पर →

(i) अघोष → जिन व्यंजनों के उच्चारण मे स्वर तन्त्रियाँ संकुत नहीं होती वह अघोष व्यंजन कहलाते है।
जैसे → क, ख

(ii) सघोष व्यंजन → जिन व्यंजनों के उच्चारण मे स्वर तन्त्रियां संकुत होती हैं, वे सघोष व्यंजन कहलाते है।
जैसे → ग, घ, ङ.

(iii) हलन्त → कभी-२ व्यंजनों के नीचे एक तिरछी रेखा लगा दी जाती है, जिसे "हलन्त" या "हल" कहते है।
→ यह रेखा यह सूचित करती है कि लिखा गया व्यंजन स्वर रहित है।

अनुनासिक → (ँ) ये वे ध्वनियाँ है जिनका उच्चारण नाक और मुँह दोनो से होता है तथा उच्चारण मे लचकता रहती है
जैसे → पाँव, आँगन, आँचल आदि।

अनुस्वार → (ं) यह स्वर के बाद आने वाला व्यंजन है। जिसकी ध्वनि नाक से निकलती है।
जैसे → अंगद, अंग, कंगन

विसर्ग → (:) यह भी स्वर के बाद आता है वस्तुतः यह व्यंजन है। जिसका उच्चारण "ह" की तरह होता है। हिन्दी मे तत्सम शब्दों मे इसका प्रयोग देखा जाता है।
जैसे → दुःख, मनः, स्वतः आदि

अनुनासिक ध्वनियाँ → देवनागरी वर्णमाला के वर्गीय व्यंजनों का पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) अनुनासिक ध्वनियाँ हैं।

Shivjeet

Scanned by CamScanner

÷ शब्द ÷

शब्द → वर्णों के सार्थक एवं व्यवस्थित समूह को शब्द कहते हैं।
जैसे → ज_ + अ + व_ + आ + न_ + अ = जवान

पद → जब किसी शब्द को वाक्य में प्रयुक्त किया जाता है तो वह पद बन जाता है।
जैसे → जवान सीमा पर लड़ते हैं।

शब्द के भेद → उत्पत्ति के आधार पर

(i) तत्सम शब्द → वे शब्द जो संस्कृत से हिंदी में आने पर अपना रूप न बदले तत्सम शब्द कहलाते थे।
जैसे → अग्नि, ग्राम, कोष्ठ, सूर्य, चन्द्र, ग्रहण, गणना, इत्यादि।

(ii) तद्भव → वे शब्द जो संस्कृत से हिन्दी में आने पर अपना रूप बदल ले। तद्भव शब्द कहलाते है।
जैसे → आग, गाँव, सुरज, चाँद, गहना, गिनती आदि।
पहचान → जो शब्द बोलने व सुनने में अटपटे लगे।

Shivjeet

(iii) देशज शब्द → वे शब्द जो क्षेत्रिय भाषा से ही लिए गए है। इनका साहित्य में प्रयोग नहीं किया जाता।
जैसे → अटकल, पगडंडी, लोटा, फाड़ी, आटा, लोट-पोट, दाबा, पिप्पणी, धोखा, चपला आदि।

(iv) विदेशज → वे शब्द जो विदेशी भाषा से लिए गए है।
जैसे → अखबार, अम्ल, आदमी, ऐनक, जमीन, गुलाम, आजादी, जनाजा, मुनाफा, जुल्फ, हुस्न, गोदाम, कूपन, रेल, प्लेटफोर्म, तोलिया, बिगुल आदि।

रचना के आधार पर →

1 रूढ़ शब्द → वे शब्द जिनके टुकड़े करने पर अर्थ न निकले।
जैसे → मकान → म + कान
नीम → नी + म

2 यौगिक शब्द → वे शब्द जिनके टुकड़े करने पर अर्थ निकले।
जैसे → पाठशाला = पाठ + शाला
↳ अध्याय ↳ केन्द्र
रणभूमि = रण + भूमि
↳ लड़ाई ↳ धरती

Scanned by CamScanner

नोट:- बहुव्रीहि समास को छोड़कर बाकी सभी समास के उदाहरण यौगिक शब्द के अंतर्गत आते है।

3 योगरूढ :- वे शब्द जिनके टूकड़े करने पर विशेष अर्थ निकले।

जैसे→ लंबोदर→ लंब + उदर = गणेश
पीतांबर → पीत + अंबर = कृष्ण

→ वह शब्द जिसके टूकड़े करने पर समाज में प्रचलित अर्थ निकले।
→ बहुव्रीहि समास के उदाहरण योगरूढ शब्द के अंतर्गत आते हैं।

विकार के आधार पर →

1 अविकारी शब्द → वे शब्द जिन पर लिंग, वचन, काल तथा क्रिया का प्रभाव न पड़े।
→ अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहते हैं।
जैसे→ परंतु, अथवा, और, तथा, लेकिन, या, तक आदि

2 विकारी शब्द → वे शब्द जिन पर लिंग, वचन, काल, क्रिया इत्यादि का प्रभाव पड़े।

नोट:- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण पर प्रभाव पड़ेगा।

अर्थ के आधार पर →

1 एकार्थी शब्द → वे शब्द जिनका एक ही अर्थ निकले।
2 अनेकार्थी शब्द → वे शब्द जिनके अनेक अर्थ निकले।
3 समानार्थी शब्द → वे शब्द जो अपना समान अर्थ दे।
जैसे→ मछली → मीन, मत्स्य
आँख → नयन, नेत्र, चक्षु
4 विलोम शब्द → वे शब्द जो अपना उल्टा अर्थ दे।
जैसे→ ऊपर - नीचे
सुख - दुख

Shiv jeet
97295-04907

Scanned by CamScanner

: लिंग :

लिंग → शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु के स्त्री या पुरुष होने का बोध हो, उसे लिंग कहते है।

भेद → लिंग के दो भेद हैं।

1 पुल्लिंग → शब्द के जिस रूप से वस्तु के पुरुष होने का बोध हो उसे पुल्लिंग कहते हैं।

(क) आकारान्त शब्द प्राय पुल्लिंग होते है जैसे → राम, सूर्य, क्रोध, समुद्र, चीता, घोड़ा, कपड़ा, घड़ा, गधा आदि।

(ख) वे ~~भावचा~~ भाववाचक संज्ञाएँ जिनके अंत में त्व, व, य होता है। वे प्रायः पुल्लिंग होती है, जैसे → गुरुत्व, गौरव, शौर्य आदि।

(ग) जिन शब्दों के अंत में पा, पन, आव, आवा, खाना आदि जुड़े होते हैं, वे प्रायः पुल्लिंग होते हैं।
जैसे → बुढ़ापा, मोटापा, बचपन, घुमाव, भुलावा, पागलखाना।

2 स्त्रीलिंग → शब्द के जिस रूप से वस्तु के स्त्री होने का बोध हो स्त्रीलिंग कहलाती हैं।

(क) अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं जैसे → लता, रमा, ममता।

(ख) इकारान्त शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग होते है जैसे → रीति, तिथी, हानि।
अपवाद → कवि, कपि, रवि (पुल्लिंग)

(ग) आई, इया, आवट, आहट, ता, इमा प्रत्यय वाले शब्द भी स्त्रीलिंग होते है।
जैसे → लिखाई, डिबिया, मिलावट, घबराहट, सुन्दरता, महिमा।

Shiv jeet

Scanned by CamScanner

÷ विलोम शब्द ÷

Shiv jeet
9729504909

अथ → इति
अवनति → उन्नति
अंतरंग → बहिरंग
अल्पज्ञ → बहुज्ञ
अल्पायु → दीर्घायु
अक्षम → सक्षम
अनुराग → विराग
अनुकूल → प्रतिकूल
अधुनातन → पुरातन
अस्त → उदय
अनुज → अग्रज
अपेक्षा → उपेक्षा
अणु → महान
आर्द्र → अनार्द्र
अनुलोम → प्रतिलोम
अंधकार → प्रकाश
अग्र → पश्च
अतिवृष्टि → अनावृष्टि
जटिल → सरल
ताप → शीत
तामसिक → सात्विक
तीव्र → मंद
दुर्जन → सज्जन
सामिष → निरामिष
सुकर → दुष्कर
सहयोगी → प्रतियोगी
सुलभ → दुर्लभ
सत्कार → दुत्कार, असत्कार
सदय → निर्दय
ह्रास → वृद्धि
हर्ष → विषाद

नश्वर → अनश्वर
निडर → डरपोक
गोचर → अगोचर
क्षर → अक्षर
प्राचीन → अर्वाचीन, नया
अनाथ → सनाथ
अनुरक्ति → विरक्ति
अमीर → गरीब
अमृत → विष
अर्थ → अनर्थ
आध्यात्मिक → भौतिक
आवश्यक → अनावश्यक
आशा → निराशा
आदि → अन्त
आय → व्यय
आयात → निर्यात
आरोह → अवरोह
आर्द्र → शुष्क
आर्य → अनार्य
कठोर → मृदु
अमर → मर्त्य
अलभ्य, दुर्लभ → सुलभ
उपरि → अधः
उद्धत → विनीत
उदयाचल → अस्ताचल
ऐहिक → पारलौकिक
ऋजु → वक्र
उपकार → अपकार
उत्थान → ज्येष्ठ
कनिष्ठ → सदाशय
दुराशय → परवर्ती

निरक्षर → प्रतीची
पूर्ववर्ती → गंभीर
प्राची → व्यक्त
चपल → अपकर्ष
गृहीत → विनम्र
आकाश → पाताल
आग → पानी
आगत → अनागत
आकर्षण → ~~अनाकर्षण~~ विकर्षण
आगामी → विगत
आचार → अनाचार
आदर → अनादर, निरादर
आदर्श → यथार्थ
गहरा → प्रकट
गुप्त → शिष्य, लघु
ग्रामीण → नागरिक
गृहस्थ → सन्यासी
घातक → रक्षक
घृणा → प्रेम
चंचल → स्थिर
चतुर → मूर्ख
चर → अचर
चल → अचल
चेतना → मूर्छा
छली → निश्चल
अल्पप्राण → महाप्राण
हिंसा → अहिंसा
एकल → बहुल
ऊर्ध्व → नीचे
एकाग्र → व्यग्र
नैसर्गिक → कृत्रिम
कुख्यात → विख्यात

निर्गुण → सगुण
कटु → मधुर
कुटिल → सरल
ग्राह्य → त्याज्य
उत्कर्ष → अधम
उदय → दक्षिण, प्रश्न
उत्तम → अनुत्तीर्ण
उत्तर → पतन
उत्तीर्ण → अनुदार, अनुतीर्ण
गर्मी → सर्दी
उपयोगी → अनुपयोगी
विजय → पराजय
जागरण → निद्रा
व्याप्ति → समाप्ति
बहिष्कार → सहकार, सहयोग
जीवित → मृत
ग्रस्त → मुक्त
ज्योति → तम
जंगम → स्थावर
घातक → रक्षक
अज्ञ → विज्ञ
असली → नकली
अपना → पराया
अनाथ → सनाथ
अर्पण → ग्रहण
अभिज्ञ → अनभिज्ञ
अग्रज → अनुज
अग्र → पश्च
असीम → ससीम
अपूर्व → भूतपूर्व
अनिवार्य → ऐच्छिक, वैकल्पिक
अन्तर्द्वंद्व → बहिर्द्वंद्व
अनायास → सायास
आशा → निराशा

Scanned by CamScanner

आदि → अन्त
आय → व्यय
आहूत → अनाहूत
आतुर → अनातुर
आयात → निर्यात
आधारयुक्त → आधारहीन
साधार → निराधार
आरोह → अवरोह
आस्था → अनास्था
आभ्यन्तर, आन्तरिक → बाह्य
आकांक्षी → निराकांक्ष
इहलोक → परलोक
उत्कर्ष → अपकर्ष
उपकार → अपकार
उत्साह → निरुत्साह
उत्थान → पतन
उदयाचल → अस्ताचल
उपसर्ग → प्रत्यय, परसर्ग
अनावृष्टि → अतिवृष्टि
~~अनावृष्टि~~
अवनि → अम्बर
अमृत → विष
अधिक → न्यून
अधुनातन → पुरातन
अधिकृत → अनधिकृत
उन्मूलन → रोपण
ऊर्ध्व → अधो, निम्न
उत्तरार्द्ध → पूर्वार्द्ध
उषा → संध्या
उदार → कृपण, संकीर्ण
उत्सुक → निरुत्सुक
उद्यमी → निरुद्यमी

उपद्रवी → निरुपद्रव
ऐक्य → अनैक्य
एड़ी → चोटी
एकाधिकार → सर्वाधिकार
तेजस्वी → निस्तेज
औचित्य → अनौचित्य
कृत्रिम → प्राकृतिक
कथ्य → अकथ्य
क्रूर → अक्रूर
कोमल → कठोर, कर्कश
कीर्ति → अपकीर्ति
आहार → निराहार
आश्रित → अनाश्रित, निराश्रित
खुशबू → बदबू
सुगन्ध → दुर्गन्ध
खिलना → मुरझाना
खाद्य → अखाद्य
खगोल → भूगोल
गुण → दोष, अवगुण
गरीब → अमीर
गंभीर → वाचाल
गमन → आगमन
गुप्त → प्रकट
गृही → त्यागी
गृहस्थी → सन्यासी
गरल → सुधा
गणिका → साध्वी
गहरा → उथला
घाटा → मुनाफा
चर → अचर
चेतन → अचेतन, जड़
चुस्त → सुस्त
उद्घाटन → समापन

Shivjeet
9729504907

Scanned by CamScanner

- उपजाऊ → अनुपजाऊ
- उत्कृष्ट → निकृष्ट
- उन्मुख → विमुख
- उग्र → सौम्य
- तरल → ठोस
- तीक्ष्ण → कुंठित
- तटस्थ → पक्षपाती
- तामसिक → सात्विक
- तरुण → वृद्ध
- तुलनीय → अतुल
- तृप्त → अतृप्त
- तुच्छ → महान
- तप्त → शीतल
- थलचर → जलचर, नभचर
- थोक → परचून
- देव → दानव
- दयालु → निर्दय
- दानी → कृपण, कंजूस
- देशभक्त → देशद्रोही
- दुराशय → सदाशय
- दीर्घकाय → कृशकाय
- दृश्य → अदृश्य
- क्रम → व्युत्क्रम
- कुटिल → सरल
- कुलषित → निष्कलुष
- कुख्यात → विख्यात, प्रख्यात
- कमी → बहुलता, अधिकता
- कृतज्ञ → कृतघ्न
- क्रोध → क्षमा
- कनिष्ठ → वरिष्ठ, ज्येष्ठ
- कलंकित → निष्कलंक
- कायर → वीर

- कटु → मृदु
- जानकार → अनजान
- जानदार → बेजान
- जय → पराजय
- झगड़ालू → शान्त
- लिखित → मौखिक
- लोभ → सन्तोष
- लाभ → हानि
- वाद → विवाद
- विधवा → सधवा
- व्यास → समास
- व्यष्टिगत → समष्टिगत
- विपन्न → संपन्न
- विस्तार → संक्षेप
- विस्तृत → संक्षिप्त
- विशिष्ट → सामान्य
- विवादपूर्ण → विवादहीन
- विवादित → निर्विवाद
- धार्मिक → अधार्मिक
- धैर्यवान → अधीर
- धन्य → धिक्कार
- निन्दनीय → प्रशंसनीय
- नया → पुराना
- नूतन → पुरातन
- निंदा → प्रशंसा, स्तुती
- नश्वर → शाश्वत
- निर्लज्ज → ~~लज्ज~~ सलज्ज
- नमक हराम → नमक हलाल
- पर्याप्त → अपर्याप्त
- प्रत्यक्ष → अप्रत्यक्ष
- पूर्वज → वंशज
- प्रधान, मुख्य → गौण

Scanned by CamScanner

पतनोन्मुख → विकासोन्मुख
सन्तोष → असन्तोष
सत्य → असत्य
सम → विषम
साधु → असाधु
स्पृश्य → अस्पृश्य
सुर → असुर
सार्थक → निरर्थक
स्वदेश → परदेश, विदेश
स्वर्ग → नरक
सजीव → निर्जीव
सापेक्ष → निरपेक्ष
सामिष → निरामिष
साकार → निराकार
मसृण → रूक्ष
मुख → पृष्ठ, प्रतिमुख
मधुर → कटुक
मौन → मुखर
मोही → निर्मोह
मान → अपमान
मिलन → विरह, बिछोह
मिथ्या → सत्य
मितव्यय → अपव्यय
महात्मा → दुरात्मा
योगी → भोगी
यश → अपयश
रचनात्मक → ध्वंसात्मक
राजतंत्र → प्रजातंत्र
रिक्त → पूर्ण
रुग्ण → स्वस्थ
रोगी → निरोगी
राजी → निराज

लोभी → निर्लोभी
लघु → दीर्घ, गुरु
संघटन → विघटन
सुदूर → सन्निकट
मुक्त → बद्ध
मुक्ति → बंधन
वैतनिक → अवैतनिक
विकारी → अविकारी, निर्विकारी
विवेक → निर्विवेक
विवेकशील → विवेकहीन
वैर → प्रीति
वक्ता → श्रोता
विविधता → एकता
शिक्षित → अशिक्षित
श्रान्त → अश्रान्त
शिष्ट → अशिष्ट
शान्ति → अशान्ति, क्षोभ
शकुन → अपशकुन
बुद्धिजीवी → श्रमजीवी
शुक्ल → कृष्ण
श्वेत → अश्वेत
शासक → शासित
शोषक → शोषित
श्री गणेश → इति श्री
शुभ्र → कृष्ण
स्वीकृत → अस्वीकृत
सुधार → विकार
स्पृही → निस्पृह
ह्रस्व → दीर्घ
हीन → उच्च
विषाद → हर्ष, आह्लाद

Scanned by CamScanner

विवादग्रस्त → विवादमुक्त
साकार → निराकार
सचेष्ट → निश्चेष्ट
सरस → नीरस
सक्रिय → निष्क्रिय
साधार → निराधार
सच्चरित्र → दुश्चरित्र
सुशील → दुःशील
सुगम → दुर्गम
सुबोध → दुर्बोध
संश्लेषण → विश्लेषण
स्वधर्मी → विधर्मी
संयोग → वियोग
स्वतंत्र → परतंत्र
स्वाधीन → पराधीन
स्वावलंबी → परावलंबी
स्थूल → सूक्ष्म
स्थूलकाय → कृशकाय
सन्धि → विग्रह
सहायक → विरोधी
स्वजाति → विजाति
सहायक → विरोधी
सुपुत्र → कुपुत्र
सृष्टि → प्रलय
हास, हास्य → रुदन
क्षम्य → अक्षम्य
क्षुद्र → विराट
सबल → निर्बल
सकाम → निष्काम

Shiv jeet
9729504909

Scanned by CamScanner

~~पर्यायवाची शब्द~~ उपसर्ग

उपसर्ग → उपसर्ग उस शब्दांश को कहते हैं जिसका स्वतंत्र रूप से भाषा में प्रयोग नहीं होता किन्तु किसी शब्द के आरंभ में आकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देता है।

* तत्सम उपसर्ग → अत्यन्त, अत्यावश्यक, अतिरिक्त, अत्याधिक, अत्युक्ति

1 अति → अतिशय, अतिक्रमण, अत्युत्तम।

2 अधि → अध्यक्ष, अधिपति, अधिकार, आधिनायक, आधिकरण, आधिकृत, आधिग्रहण, आधिष्ठाता।

3 अनु → अनुसार, अनुशासन, अनुचर, अनुसरण, अनुज, अनुगमन, अनुकूल, अनुमान, अनुग्रह, अनुरोध, अनुशीलन, अनुभव, अनुपात, अन्वेषण, अनुसंधान, अनुरोध, अनुवाद, अन्विति।

4 अप → अपमान, अपयश, अपकीर्ति, अपकार, अपशब्द, अपकर्ष, अपव्यय, अपवाद, अपशकुन, अपहरण।

5 अभि → अभिनव, अभ्यागत, अभ्युदय, अभिमान, अभियान, अभियोग, अभियुक्त, अभिभावक, अभिलाषा, अभिमुख, अभिप्राय, अभिषेक, अभीष्ट, अध्यागत।

6 अव → अवतार, अवतरण, अवनति, अवगुण, अवशेष, अवज्ञा, अवकाश, अवगत, अवस्था, अवरोह।

7 आ → आजन्म, आजीवन, आजानु, आमरण, आक्रमण, आकाश, आगमन, आबालवृद्ध, आकर्षण, आकर्षक, आदान, आकार, आमुख, आरोह, आक्रोश, आसक्त।

8 उत, उद → उत्कर्षण, उत्थान, उत्पन्न, उत्पत्ति, उन्नति, उत्साह, उद्भव, उद्यम, उद्योग, उद्गार, उद्देश्य, उच्चार, उद्गम, उत्कंठा, उत्तम, उक्त, उल्लेख, उल्लास, उड्डयन, उज्ज्वल, उच्चारण, उच्छिष्ट, उन्नयन।

9 उप → उपकार, उपयोग, उपप्रधान, उपनाम, उपासना, उपभेद, उपखंड, उपदेश, उपमान, उपवन, उपस्थिति, उपचार, उपनिवेश, उपोदय, उपहार, उपमंत्री।

10 दुर, दुस → दुस्साहस, दुरुपयोग, दुर्गति, दुर्गम, दुर्बुद्धि, दुर्जन, दुर्दशा, दुर्व्यवस्था, दुर्दिन, दुर्भाग्य, दुष्ट, दुष्प्रभाव, दुर्लभ, दुराचार, दुस्सा, दुस्साध्य, दुश्चरित्र, दुर्गुण, दुर्बल, दुर्भिक्ष, दुर्लक्ष्य।

Scanned by CamScanner

11 नि → नियुक्त, निवास, निवारण, निदान, निरोध, निबन्ध, निदाध
निकृष्ट, निरूपण, निमग्न, निषेध, निसीम, नियोजन।

12 निर्, निस् → निर्भय, निरपराध, निराकरण, निर्गमन, निर्यात, निर्दोष,
निर्वाह, नीरस, नीरव, निर्मल, निर्जीव, निश्चल, निष्कपट
निराशा, निःशुल्क, निश्छल, निस्संदेह, निर्धन, निराशा,
निरोग।

13 परा → पराजय, पराक्रम, परामर्श, पराभव।

14 परि → ~~परिक्षा~~ परिक्रमा, परिपूर्ण, परिधि, परिणाम, परिणय, परिवर्तन,
परिजन, परिचय, परितोष, परिताप, पर्यावरण।

15 प्र → प्रगति, प्रयोग, प्रमाण, प्रसार, प्रबल, प्रसिद्धि, प्रस्थान, प्रमोद, प्रकाश
प्रख्यात, प्रचार, प्रयास।

16 प्रति → प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिदान, प्रत्युत्तर, प्रतिरक्षण, प्रत्यक्ष, प्रतिनिधी,
प्रतिहिंसा, प्रतिहारी, प्रतिवाद, प्रतिमान, प्रतिशोध, प्रत्याशी, प्रतिपादन।

17 वि → विशेष, विकार, वियोग, विदेश, विस्मरण, विवाद, विभिन्न, विज्ञान,
विभाग, विकाल, विशुद्ध, विमुख, विराम, विमल, विक्रय, विजातीय।

18 सम → समुचित, समीक्षा, समालोचन, संभव, सम्मान, सम्पत्ति, संहार,
संयोग, सम्मुख, संतोष, संस्कार।

19 सु → सुयश, सुकर, सुकर्म, सुकुमार, सुपुत्र, सुशिक्षित, सुवास, सुजान,
सुरुचि, सुगम, सुदूर, सुकन्या, सुमन, सुकर्म।

:- हिन्दी के उपसर्ग :-

1 अ → अचेत, अशान्त, अपढ़, अचूक, अचल, अटल, अछूत, अजर, अमर।
2 अन → अनहोनी, अनसुनी, अनपढ़, अनमोल, अनजान, अनमेल, अनाचार।
3 अध → अधकचरा, अधखिला, अधपका, अधमरा, अधसेरा, अधबीच।
4 उन → उन्नीस, उनतीस, उनतालिस, उनचास।
5 कु → कुचाल, कुचक्र, कुपूत, कुढंग, कुदिन, कुपुत्र।
6 नि → निकम्मा, निडर, निहत्था, निठल्ला, निगोड़ा।
7 बिन → बिनब्याहा, बिनबुलाया, बिनबोया।
8 भर → भरपेट, भरसक, भरमार, भरपूर।

Shiv jeet

9 दु → दुभाषिया, दुबला, दुसह, दुगुना।
10 ति → तिकोना, तिराहा, तिपाही।
11 चौ → चौपाई, चौमासा, चौराहा, चौसठ, चौकन्ना।

Scanned by CamScanner

÷ उर्दू के उपसर्ग ÷

1 अल → अलबत्ता, अलबेला।
2 कम → कमउम्र, कमजोर, कमबख्त, कमसिन, कमखर्च, कमअक्ल।
3 खुश → खुशबू, खुशदिल, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशनसीब।
4 गैर → गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क।
5 दर → दरअसल, दरमियान, दरख्वीकत।
6 ना → नापसन्द, नालमझ, नालायक, नाजायज, नाबालिक, नामुमकिन।
7 ब, बद → बनाम, बदमाश, बदहजमी, बदचलन, बदबू, बद दिमाग।
8 बर → बर्दाश्त, बर्खास्त।
9 बे → बेईमान, बेरोजगार, बेइज्जत, बेवकूफ, बेचारा, बेकसूर, बेकार, बेअक्ल, बेखटके, बेदखल, बेसहारा, बेशक।
10 ला → लाजवाब, लावारिस, लाइलाज, लाचार, लापरवाह।
11 सर → सरकार, सरताज, सरपंच, सरहद।
12 हम → हमसफर, हमदर्दी, हमवतन, हमपेशा, हमदम, हमख्याल, हमराज।

०- उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय ०-

1 अ, अन् → अज्ञान, अभाव, अधर्म, अकृत्रिम, अप्राकृतिक, अनादि, अनन्त, अनागत, अनर्थ।
2 अधः → अधःपतन, अधोगति, अधोलिखित, अधोमुख।
3 अलम → अलंकार, अलंकृत।
4 चिर → चिरकाल, चिरायु, चिरन्तन
5 पुरा → पुरातन, पुरातत्व।
6 सह → सहयोगी, सहपाठी, सहचर, सहमत, सहकर्मी, सहकारी।
7 स्व → स्वधर्म, स्वजाति, स्वदेश, स्वतंत्र, स्वाभिमान, स्वरूप, स्वशासन।
8 सत् → सज्जन, सत्कार्य, सत्कार, सत्कर्म, सन्मति, सन्मार्ग, सदुपयोगी।
9 पुनः → पुनर्जन्म, पुनर्विवाह, पुनरुत्थान, पुनरुक्ति, पुनर्निर्माण, पुनर्विचार
10 प्राक → प्राक्कथन, प्रागैतिहासिक।
11 बहि → बहिष्कार, बहिर्गमन, बहिर्मुखी, बहिरंग

Shivjeet
9729505907

Scanned by CamScanner

ः प्रत्यय ः

प्रत्यय → वे शब्दांश जो शब्द के अंत मे जुड़कर, उनके अर्थ मे परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते है।
प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं → 1 तद्धित प्रत्यय
2 कृत प्रत्यय या कृदन्त।

→ कुछ महत्वपूर्ण प्रत्यय →

1 इक → वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक, धार्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक।
2 इत → हर्षित, पुष्पित, ~~प~~ पल्लवित, आन्दित, अंकित, दुखित शोभित।
3 इल → पंकिल, फेनिल, जटिल इत्यादि।
4 मान → श्रीमान, धीमान, बुद्धिमान इत्यादि।
5 वत वान → धनवान, बलवान, गुणवान, रूपवन इत्यादि।
6 ल → वत्सल, शीतल, श्यामल, मंजुल, मांसल।
7 लु → श्रद्धालु, दयालु, कृपालु।
8 ईय → भारतीय, शास्त्रीय, नाटकीय।
9 नीय → पूजनीय, आदरणीय, माननीय, दंडनीय।
10 ऐला → विषैला, कसैला आदि।
11 आ → प्यासा, भूखा, मैला, प्यारा, ठंडा घना आदि।
12 ई → भारी, देशी, गुलाबी, ऊनी, जंगली
13 ईला → चमकीला, शर्मीला, रंगीला, भड़कीला, रसीला।
14 ऊ → पेटू, ढोलू, बाजारू।
15 हरा → इकहरा, दुहरा, तिहरा, इत्यादि।
16 अक → गायक, सेवक, चालक, पालक, पोषक।
17 ता → दाता, भोक्ता, नेता
18 उक → भावुक, भिक्षुक, कामुक
19 अक्कड़ → पियक्कड़, भुलक्कड़, घुमक्कड़।
20 वाला → पढनेवाला, लिखनेवाल, चलनेवाल।
21 अना → वेदना, घटना, सूचना, वंदना, भावना।

Shiv jeet

Scanned by CamScanner

22 आ → घेरा, फेरा, झगड़ा, प्रिया, महोदया,
23 नी → करनी, भरनी
24 आन → उड़ान, थकान
25 आवा → पहनावा, बुलावा, भुलावा
26 आवट → रुकावट, सजावट, थकावट
27 आहट → सनसनाहट, घबराहट, चिल्लाहट
28 आव → बहाव, लगाव, सुझाव, जमाव।
29 आवना → डरावना, सुहावना, लुभावना।
30 हार → रखनहार, होनहार।
31 वैया → गवैया, रखवैया।
32 आना → जुर्माना, घराना, सालाना।
33 आनी → जेठानी, देवरानी,
34 इन → धुहारिन, सुनारिन, सौतिन
35 इयत → इन्सानियत, असलियत, आदमियत
36 ई → घोड़ी, चाची, लड़की,
37 कार → चित्रकार, मूर्तिकार, साहित्यकार, नाटककार।
38 खोर → आदमखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर।
39 ज → जलज, पंकज, अनुज, अग्रज
40 जीवी → बुद्धिजीवी, दीर्घजीवी, चिरंजीवी
41 ज्ञ → विशेषज्ञ, अल्पज्ञ, सर्वज्ञ, अभिज्ञ
42 तया → सामान्यतया, साधारणतया, मुख्यातया
43 दार → ईमानदार, दुकानदार, मालदार
44 तः → अंशतः, मुख्यतः, स्वतः, स्वभावतः,
45 नाक → खतरनाक, दर्दनाक, शर्मनाक
46 मन्द → अकलमंद, जरूरतमंद, दौलतमन्द
47 गर → बाजीगर, कारीगर, जादूगर

Shiv jeet

Scanned by CamScanner

वाक्यांश के लिए एक शब्द

1. जो धन का दुरुपयोग करता है → अपव्ययी
2. जिसे जाना न जा सके → अज्ञेय
3. जहाँ पहुँचा न जा सके → अगम्य
4. जो सदा रहे → शाश्वत, अमर
5. जिसका दमन न हो सके → अदम्य
6. जिसका वर्णन न किया जा सके → अवर्णनीय, वर्णनातीत
7. जो सबसे आगे रहता हो → अग्रगामी, अग्रगण्य, अग्रणी
8. जो कम खर्च करता हो → अल्पव्ययी
9. जो आवश्यकतानुसार खर्च करे → मितव्ययी
10. जिसे क्षमा न किया जा सके → अक्षम्य
11. जिसकी आशा न की गई हो → अप्रत्याशित
12. आशा से अधिक → आशातीत
13. जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न हो → अतीन्द्रिय
14. जो इन्द्रियों के द्वारा जाना न जा सके → अगोचर
15. न करने योग्य → अकर्मण्य
16. जो हटाया या छोड़ा न जा सके → अनिवार्य, अपरिहार्य
17. जिसका मन या ध्यान कहीं और हो → अन्यमनस्क
18. किसी चीज की खोज करने वाला → अन्वेषक
19. जिसका कोई शत्रु न हो → अजातशत्रु
20. अन्दर छिपा हुआ → अन्तर्निहित
21. जिसमें धैर्य न हो → अधीर
22. ईश्वर मे विश्वास रखने वाला → आस्तिक
23. ईश्वर में विश्वास न रखने वाला → नास्तिक
24. अपनी प्रशंसा स्वयं करना → आत्मश्लाघा
25. बढ़ा-चढ़ाकर किया गया वर्णन → अतिशयोक्ति
26. ऐसी आय जो निश्चित न हो → आकाशवृत्ति, अनिश्चित आजीविका
27. जो किसी का पक्ष न ले → तटस्थ, निष्पक्ष
28. बुरे मार्ग पर चलने वाली → कुमार्गी
29. कांटों से भरा हुआ → कंटकाकीर्ण
30. जो निरंतर प्रयत्नशील हो → कर्मठ

Shivjeet
97295-04909

Scanned by CamScanner

31 क्या करना चाहिए क्या नहीं निर्णय न लेने वाला → किंकर्तव्य, विमूढ़
32 जो छिपाने योग्य हो → गोपनिय
33 जो देखने योग्य हो → दर्शनीय
34 ध्यान रखने योग्य → ध्यातव्य
35 दूर (भविष्य) की सोचने वाला → दूरदर्शी, अग्रशोची
36 शीघ्र चलने वाला → द्रुतगामी
37 जिसे लाँघना कठिन हो → दुर्लंघ्य
38 नया आया हुआ → नवागन्तुक
39 पत्तों से बनी कुटिया → पर्णकुटी
40 जिस पर अभियोग लगाया गया हो → अभियुक्त
41 जो तत्काल उत्तर/हल सोच लें → प्रत्युत्पन्नति
42 किसी विषय का पूर्ण विद्वान → पारंगत, निपुण
43 बाद में मिलाया गया → प्रक्षिप्त
44 इतिहास से पहले का → प्रागैतिहासिक
45 आँख के सामने → प्रत्यक्ष
46 युद्ध में स्थिर रहने वाला → युद्धिष्ठिर
47 जिसे वाणी पर पूर्ण अधिकार हो → वाचस्पति
48 एक ही समय में होने वाला → समसामयिक, समकालीन
49 स्मरण करने वाला → स्मारक
50 समान आयु का → समवयस्क
51 युद्ध में स्थिर रहने वाला ~~युद्धिष्ठिर~~ → युधिष्ठिर
52 मोक्ष प्राप्ति की इच्छा रखने वाला → मुमुक्षु
53 सिर पर धारण करने योग्य → शिरोधार्य
54 आदि से अन्त तक → आद्योपान्त
55 बालकों से बुढ़ो तक → आबालवृद्ध
56 मृत्यु होने तक → मृत्युपर्यन्त
57 जिसे दण्ड का भय न हो → उद्दण्ड
58 जिसके पास कुछ भी न हो → अकिंचन
59 जिसके पास कुछ भी न हो → मर्मान्तक
60 दूसरों के दोष ढूँढने वाला → छिद्रान्वेषी
61 भिन्न जातियों के माता-पिता की → वर्णसंकर
62 जो होकर ही रहेगा → अवश्यम्भावी

Shivjeet

Scanned by CamScanner

63 बिना पलक झपकाए → अपलक, निर्निमेष
64 बुद्ध ही जिसके नेत्र हो → प्रज्ञाचक्षु
65 हाथ से लिखी हुई → हस्तलिखित, पाण्डुलिपी
66 शरण में आया हुआ → शरणागत
67 जो अभी-2 पैदा हुआ हो → नवजात
68 एक-दूसरे पर आश्रित → अन्योन्याश्रित
69 जिसकी हजार बाहें हों → सहस्त्रबाहु
70 दो अर्थ देने वाला शब्द → श्लिष्ट
71 अपने चारों ओर चक्कर काटना → परिभ्रमण
72 किसी भाषा के ग्रन्थों का समूह → वाङ्मय (साहित्य)
73 मरने के निकट → मरणासन्न / मुमूर्षु
74 एक-एक अक्षर के अनुसार → अक्षरशः
75 जल में लगने वाली आग → बड़वानल, बड़वाग्नि
76 वन में लगने वाली आग → दावाग्नि
77 दीवारों पर बने हुए चित्र → भित्ति चित्र
78 जो एक स्थान पर टिककर न रहे → यायावर, खानाबदोश
79 युद्ध की इच्छा रखने वाला → युयुत्सु
80 रात को दिखाई न देने वाला रोग → रतौंधी
81 खाल (त्वचा) का रोग → स्कर्वी
82 बाल्यावस्था व युवावस्था के बीच का समय → वयस्क सन्धि
83 स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का समय → स्वतंत्रयोत्तर
84 सूचित किया हुआ → विज्ञप्ति
85 एक बात को बार-2 दोहराना → पिष्ट
86 जो स्वयं पैदा हुआ हो → स्वयंभू
87 अन्दर की बात जानने वाला → अंतर्यामी

Shiv jeet

Scanned by CamScanner

→ मुहावरे व उनके अर्थ →

Shiv jeet
9729504907

मुहावरा	→ अर्थ
1 अंग-2 ढीला होना	→ थक जाना
2 अँगारे उगलना	→ क्रोध में कठोर वचन कहना
3 अँगूठा दिखाना	→ काम करने से साफ इंकार करना
4 अँधेरे घर का उजाला	→ इकलौता पुत्र
5 अक्ल चरने जाना	→ बुद्धि भ्रष्ट होना
6 अपना उल्लू सीधा करना	→ मतलब निकालना
7 अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना	→ अपनी प्रशंसा स्वंय करना
8 अंग-अंग मुस्कान	→ बहुत प्रसन्न होना
9 अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना	→ स्वंय अपनी हानि करना
10 आड़े हाथ लेना	→ खरी-खरी सुनाना
12 आस्तीन का साँप	→ धोखेबाज मित्र
13 नजरों में गिरना	→ सम्मान रहित होना
14 आँखों में धूल झोंकना	→ धोखा देना
15 आँखों का काँटा	→ अप्रिय व्यक्ति
16 आँखों में चर्बी उतरना	→ अभिमान होना
17 आँखें पथरा जाना	→ प्रतीक्षा में थक जाना
18 आँखें खुलना	→ अक्ल आना
19 आँखों पर पर्दा डालना	→ लाभ के कारण सच्चाई न दिखना
20 आँखों का तारा	→ बहुत प्यारा
21 आँख उठाना	→ बुरी तरह से देखने का साहस करना
22 आँखों में रात काटना	→ रात भर जागना
23 आँखों में खटकना	→ बुरा लगना
24 एक नजर से देखना	→ सबके साथ समान व्यवहार करना
25 आकाश में बातें करना	→ बहुत ऊँचा
26 आटे-दाल का भाव मालूम होना	→ कठिनाई का अनुभव होना
27 आपे से बाहर होना	→ अधिक क्रोध से काबू में न रहना
28 आसमान सिर पर उठाना	→ अधिक शोर मचाना
29 आँधी के आम	→ सस्ती चीज
30 आकाश-पाताल का अन्तर	→ बहुत अधिक अंतर

Scanned by CamScanner

31 आग मे घी डालना → क्रोध को बढ़ाना
32 आकाश के तारे तोड़ना → असंभव कार्य करना
33 आकाश-पाताल एक करना → पूरा प्रयत्न करना
34 अरण्य रोदन → व्यर्थ प्रयास
35 औंघट घाट चलना → उचित मार्ग छोड़, अनुचित मार्ग पर चलना
36 आलमान में थकेली लगाना → चतुराई दिखाना
37 ईद का चाँद → बहुत कम दिखाई देना
38 ईंट से ईंट बजाना → नष्ट-भ्रष्ट करना
39 ईंट का जवाब पत्थर से देना → बढ़चढ़ कर उत्तर देना
40 अँगली उठाना → निन्दा करना
41 अँगली पर नचाना → वश में करना
42 अँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना → तनिक सा सहारा पाकर सारे पर अधिकार करना
43 उड़ती चिड़िया पहचानना → दूर की बात जान लेना
44 ऊँट के मुँह में जीरा → अधिक आवश्यकता से कम वस्तु मिलना
45 ऊँची दुकान फीके पकवान → आडम्बर अधिक पर तत्व कुछ नहीं
46 एक लकड़ी से हाँकना → सबसे एक-सा व्यवहार करना
47 एड़ी-चोटी का पसीना बहना → बहुत परिश्रम करना
48 एक अनार सौ बीमार → माँग अधिक पूर्ति कम
49 ऐंठ लेना → ठग लेना
50 ऐंठ निकालना → घमंड दूर करना
51 ओखली मे सिर देना → जानबूझकर विपत्ति मे पड़ना
52 कंगाली मे आटा गिला होना → एक मुसीबत के रहते दूसरी मुसीबत आना
53 कमर कसना है → तैयार होना
54 कलई खुलना → रहस्य प्रकट होना
55 कलेजा मुँह को आना → अत्यन्त व्याकुल होना
56 कलेजा छलनी होना → अ दिल बहुत दुखी होना
57 कफन सिर से बाँधना → मरने के लिए तैयार होना
58 कानो-कान खबर न होना → बिल्कुल खबर न होना
59 कान पर जूँ तक न रेंगना → कुछ असर न होना
60 कोल्हू का बैल → दिन-रात परिश्रम करना

Shiv Geet

Scanned by CamScanner

61 कूप मण्डुक होना → अल्पज्ञ होना
62 कान खड़े होना → सावधान होना
63 कुल्हिया मे गुड़ फोड़ना → गुप्त रूप से कोई कार्य करना
64 कुएँ मे भाँग पड़ना → सबकी अकल मारी जाना
65 किस खेत की मूली → महत्वहीन
66 खेत रहना → युद्ध मे मारे जाना
67 खून का घूँट पीकर रह जाना → क्रोध को रोक लेना
68 खिचड़ी पकाना → षडयंत्र रचना या छिपकर सलाह करना
69 खून का प्यासा → मरने - मारने पर उतारू
70 गड़े मुर्दे उखाड़ना → पिछली बातों को याद करना
71 गिरगिट की तरह रंग बदलना → किसी भी बात पर स्थिर न रहना
72 गागर मे सागर भरना → बड़ी बात को संक्षेप मे कहना
73 गाँठ का पलोथन लगाना → जेब से पैसे खर्च करके दूसरों का काम करना
74 गोद सूनी होना → संतान की मृत्यु होना
Shivjeet
9729504909
75 गुड़ देकर मारना → कपटपूर्ण व्यवहार करना
76 गंगा लाभ होना → देहांत होना
77 गाजर मूली समझना → तुच्छ समझना
78 गाँठ खुलना या गुत्थी सुलझना → झंझट दूर होना
79 घर मे गंगा बहना → मनचाही वस्तु पास मे ही मिलना
80 घड़ो पानी पड़ना → लज्जित होना
81 घाव हरा होना → दुखी की याद आना
82 घाट-घाट का पानी पीना → बहुत अनुभवी होना
83 घास खोदना → व्यर्थ समय गवाँना
84 घाव पर नमक छिड़कना → दुखी का हृदय दुखाना
85 घी के ~~दिए~~ दीये जलाना → खुशी मनाना
86 घात मे रहना → किसी का अनिष्ट करने के लिए मौका ढूढंना
87 घोड़े बेचकर सोना → निश्चिंत होना
88 घर फूँक कर तमाशा देखना → अपना नुकसान कर आनन्द मनाना
89 घर का न घाट का → कहीं का न रहना
90 घर की मुर्गी दाल बराबर → आसानी से वस्तु प्राप्त कर विशेष आदर न करना

Scanned by CamScanner

91 घर मे चूहे कुदना → अति दरिद्र होना
92 घोट कर पी जाना → रट लेना
93 चदर के बाहर पैर पसारना → अपने सामर्थ्य से अधिक खर्च करना
94 चूडि़याँ पहनना → कायर ~~बनना~~ बनना
95 चुल्लु भर पानी मे डूब करना → शर्म अनुभव करना
96 चेहरा उतरना → उदास होना

Shiv jeet

97 छटी का दुध याद आना → भारी संकट मे पड़ना
98 छक्के छुड़ाना → बुरी तरह हराना

97295
04909

99 छाती पर मूँग दलना → जी दुखाना
100 छाती पर साँप लोटना → द्वेष से जलना
101 छुपा रुस्तम → भीतर ही भीतर काम करने वाला
102 जान पर खेलना → जीवन का मोह त्याग कर काम करना
103 जली-कटी सुनाना → कठोर शब्दों का प्रयोग
104 जिस हाँडी मे खाना उसी मे छेद करना → उपकार के बदले अपकार
105 जी उचट जाना → मन न लगना
106 जीवन की घड़ियाँ गिनना → मृत्यु समीप होना
107 टेढ़ी खीर → कठिन काम
108 टका सा जवाब देना → कोरा उत्तर देना
109 टोपी उछालना → अपमानित करना
110 टूट पड़ना → आक्रमण करना
111 ठिकाने लगाना → खर्च कर देना, खत्म कर देना
112 ठोकरें लगना → भूल के कारण हानि होना
113 ठकुर सुहाती करना → चापलूसी करना
114 डूबते को तिनके का सहारा → संकट मे थोड़ी-सी सहायता
115 तिल का ताड़ बनाना → मामूली बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना
116 तीन-तेरह होना → बिखर जाना
117 तू-तू मैं-मैं होना → बातों-2 मे लड़ाई होना
118 त्राहि-त्राहि करना → सहायता के लिए पुकारना
119 थाली का बैंगन → सिद्धान्त हीन, अस्थिर विचारों वाला
120 दर-दर भटकना → जगह-जगह फिरना
121 दाल मे कुछ काला होना → कुछ गड़बड़ लगना

Scanned by CamScanner

122 दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति करना → खूब उन्नति करना
123 दाल न गलना → तरकीब न निकलना
124 दूध का दूध पानी का पानी → ठीक न्याय
125 दाँतों तले अँगुली दबाना → आश्चर्य प्रकट करना
126 दाँत खट्टे करना → बुरी तरह हराना
127 दो नावों में पैर रखना → दो तरफ चलने की कोशिश करना
128 दुम दबाकर भागना → डर कर भागना
129 दाँत पीसना → क्रोध करना
130 दाने-दाने को तरसना → बहुत गरीब होना
131 दिमाग सातवें आसमान पर होना → बहुत घमण्ड होना
132 धज्जियाँ उड़ाना → नष्ट-भ्रष्ट करना
133 धूप में बाल सफेद करना → अनुभवहीन
134 धुन सवार होना → कुछ करने योग्य का ध्यान होना
135 धुन का पक्का → सिद्धांत का पक्का
136 धूल में मिल जाना → नष्ट हो जाना
137 नमक-मिर्च लगाना → बढ़ा चढ़ाकर कहना
138 नाक में दम करना → तंग करना
139 नाम कमाना → प्रसिद्ध होना
140 नौ दो ग्यारह होना → भाग जाना
141 नानी याद आना → बहुत संकट में पड़ना
142 नाक का बाल → पक्का मित्र
143 नजरों में गिर जाना → इज्जत बिगाड़ना
144 नाकों चने चबाना → बहुत परेशान करना
145 पत्थर की लकीर → पक्की बात
146 पहाड़ टूटना → मुसीबत में पड़ना
147 पंजे उखड़ जाना → हार कर भाग जाना
148 पलकें बिछाना → स्वागत करना
149 पीठ दिखाना → पीछे हटना
150 पाँचों अंगुलियाँ घी में होना → लाभ ही लाभ होना

Scanned by CamScanner

÷ तत्सम - तद्भव सूची ÷

Shiv jeet 9729504907

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तद्भव	तत्सम
अजान	भगिनी	बहन	अचरज	आश्चर्य
उजला	अश्रु	आँसु	रात	रात्रि
लोहा	वर्षा	बरसात	पीला	पीत
नया	~~सप्त~~ सप्त	~~सात~~ सात	रीत्ता	रिक्त
मौत	पूर्णिमा	पूनम	बकरा	बर्कर
पत्थर	ताम्र	ताँबा		
चमार	मयूर	मोर		
सुनार	हस्त	हाथ		
भगत	स्थल	थल		
अटारी	गौ	गाय		
मोती	अंधकार	अंधेरा		
कुआँ	परीक्षा	परख		
बहू	चरित्र	चरित		
दाता	विवाह	ब्याह		
धुआँ	जिह्वा	जीभ		
चैत	उच्च	ऊँचा		
कपड़ा	पर्यंक	पलंग		
कीड़ा	महिषी	भैंस		
भिखारी	भ्रमर	भौंरा		
हाथी	सत्य	सच		
बाघ	ग्राहक	गाहक		
सूना	दुर्बल	दुबला		
पंख	वर्ष	बरस		
आग	सूर्य	सुरज		
घी	सूत्र	सूत		
घोड़ा	आम्र	आम		
गाँव	तीक्ष्ण	तीखा		
दाँत	उष्ट्र	ऊँट		
काज	नग्न	नंगा		
कुम्हार	परशु	फरसा		
	पत्र	पत्ता		
	पिपासा	प्यास		
	आश्रय	आसरा		
	पोष	पूस		
	श्यामल	साँवला		

Scanned by CamScanner